प्रसार बुलेटिन 2014/02

kvklodipurarwal@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

मुर्गी पालन

डॉ0 विभा कुमारी,
विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृषि विज्ञान केन्द्र, लोदीपुर फार्म, अरवल

डॉ0 राकेश कुमार,
कार्यक्रम समन्वयक,
कृषि विज्ञान केन्द्र,
लोदीपुर फार्म, अरवल

डॉ0 रणवीर कुमार सिन्हा
सहायक प्रध्यापक–सह–कनीय वैज्ञानिक
बि.भी.सी., पटना

मुर्गी पालन

मुर्गी पालन से जुड़े किसान भाईयों के आर्थिक एंव सामाजिक विकास में मुर्गी एंव मुर्गी उत्पाद की अहम् भूमिका है। घर में मुर्गी पालने पर उसके रख रखाव एंव भोजन पर कोई व्यय नहीं पड़ता, क्योंकि खरपतवार की पत्तियाँ, घर का बचा–खुचा भोजन, शाक–भाजी के बेकार पत्ते और अनाज की छाँटन, आटा चक्की के इर्द–गिर्द बिखरा अनाज, अनाज के फटकन मुर्गी पालन के काम में आ जाती है।

मुर्गी पालन की तीन विशिष्ट विशेषताएँ :–

- अल्पअवधि में संतति उत्पादन क्षमता
- अतिशीघ्र शारीरिक बढ़ौतरी
- उच्च आहार उत्पादन परिवर्तन क्षमता

विशेष सावधानियाँ :–

- ब्रायलर पालन के लिए औल इन औल आउट विधी से चूजे पालें। इसमे एक ही आयु वर्ग के चूजों को पालते हैं तथा विक्री योग्य होने पर एक साथ बेच देते है।
- दो खेप के बीच का अन्तराल करीब 15 दिन का होना चाहिए। इस दौरान मुर्गी घर को रोगाणु–नाशक दवा से सफाई करें।
- मुर्गी घर का निर्माण ऊँची जगहों पर करे तथा इसका लम्बा शिरा पूरब–पश्चिम होना चाहिए। मुर्गी घर की सतह कंकरीट की या कच्ची हो सकती है।
- दीवार मे जालीदार खिड़की हो जो दोनों ओर की दीवार पर आपने सामने रहे ताकि क्रॉस वेनटीलेशन हो सकें। मुर्गी ाला के दरवाजे पर चूना अथवा कीटाणुनाशक दवा से बोरा भिंगोकर रखना चाहिए ताकि आने जाने वाले व्यक्ति के पैरों के माध्यम से बीमारियों के कीटाणु मुर्गीघर में न पहुँचे।

प्रति मुर्गी आवश्यकता

आयु (सप्ताह)	फर्श स्थान (वर्ग फुट)	आहार स्थान (इंच)	पानी का स्थान (इंच)
0 – 2	0.25	2.0	0.5
3 – 4	0.5	3.0	0.7
5 – 6	1.0	3–4	1–2

चूजों के आने से पहले क्या करें

- मुर्गीघर की सभी दीवार, छत, फर्श को रगड़ कर साफ करें तथा कीटाणुनाशक दवा (फिनाल, मैलेथियान) के घोल का छिड़काव करें।
- फर्श सूखने के बाद उस पर लकड़ी का बुरादा एक से डेढ़ बोरी प्रति 250 पक्षियों के हिसाब से बिछावें।
- चूजे आने के एक दिन पहले ही ब्रूडर चालू कर दें जिसके चारों ओर 2 से 2 फूट की दूरी पर डेढ़ फुट उँची चिक गार्ड लगावे। यह चिक गार्ड 8 दिनों के बाद हटा दें।
- 12 वर्ग फूट के एक ब्रूडर जिसमें तीन 60 वाट के तथा दो 100 वाट के बल्ब लगे हों जिसमें तकरीबन 250 चूजे आते हैं।
- प्रथम सप्ताह में ब्रूडर के नीचे का तापमान 250°F रखते हैं, जिसे 5°F प्रति सप्ताह की दर से कम करते हुए 70°F तक लायें।
- ब्रायलर घर का तापमान 70°F व नमी का स्तर 60–70 प्रतिशत रखें।

चूजे आने के बाद का प्रबन्धन

- प्रथम 12–15 घण्टे चूजों को सिर्फ चीनी का पानी प्रति साढ़े चार लीटर पानी में आधा कप चीनी / ग्लूकोज मिलाकर दें।
- इसके दो घण्टे बाद अखबार पर या चूजों के डिब्बों के ढक्कनों पर दली हुई मक्का दें।
- 3 दिन बाद अखवार हटा कर दाने के बर्तनों मे आहार देना चालू करे।

Printed by : Diksha Art & Prints, Patna, Mob. : 9431436534

- फीडर में दाना दो तिहाई से ज्यादा न भरें तथा फीडर का किनार पक्षी की पीठ की उँचाई के स्तर पर होनी चाहिए।
- ब्रायलर को करीब 2 से 2.5 ग्राम पानी प्रति 1 ग्राम आहार की खपत पर चाहिए।
- दो दाने के बर्तनों के बीच में एक पानी का बर्तन कुछ इस तरीके से रखें की दो दाने या पानी के बर्तनों के बीच की दूरी 10 फुट से अधिक न हो।

आहार

आहार में मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूँ का चोकर, चावल की पालिश, मूँगफली की खली, मांस तथा मछली का चूरा विभिन्न अनुपातों में मिलाया जाता है। इस मिश्रण में विटामिन्स तथा खनिज लवण मिलाकर सम्पूर्ण आहार तैयार करके खिलाया जाना लाभकर होता है।

प्रकाश की व्यवस्था

ब्रायलर चूजों को 24 घण्टे रोशनी की आवश्यकता होती है।

बिमारियों से बचाव

मुर्गी को तनाव एंव बीमारियों से बचाने हेतु समय–समय पर डीर्वमिंग दवा, विटामिन तथा एन्टीबायोटीक दवा का उपयोग करते रहना चाहिए।

इससे होने वाले कुछ छुतदार बीमारी के बचाव के लिये सामयिक टीके अवश्य लगायें।

ब्रायलर मुर्गी के लिए टीकाकरण तालिका

बिमारी	टीका	समय
मरेक्स डीजीज	मरेक्स डीजीज वैक्सीन	एक दिन के चूजे में
रानी खेत डीजीज	रानी खेत डीजीज वैक्सीन	7 दिनों में
गमबोरो डीजीज	गमबोरो वैक्सीन	14 दिनों में

नोट– वैक्सीन उपयोग मे समय साफ एंव शुद्ध पानी, बिना एन्टीवायटीक तथा ग्लूकोज दी हुई, उपयोग में लानी चाहिए।

विशेष जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल से सम्पर्क करें।